ST. LAWRENCE HIGH SCHOOL
A JESUIT CHRISTIAN MINORITY INSTITUTION
CLASS: 12

पाठ्य सामग्री

SUBJECT :Hindi DATE: 18. 06 .2020

पाठ नाम - अवकाशवाली सभ्यता

कवि परिचय:

रामधारी सिंह दिनकर (23 सितंबर, 1908 – 24 अप्रैल, 1974) एक भारतीय हिंदी कवि, निबंधकार और चिकित्सक थे, जिन्हें सबसे महत्वपूर्ण आधुनिक हिंदी कवियों में से एक माना जाता है। दिनकर राष्ट्रवादी कवियों में राष्ट्रवादी कविता के साथ एक विद्रोही कवि के रूप में उभरे। उनकी कविता में वीर रस की प्रधानता है,और राष्ट्रवाद की भावना को बढाने वाली प्रेरणादायक देशभक्तिपूर्ण रचना के कारण उन्हें राष्ट्रकवि ("राष्ट्रीय कवि") के रूप में सम्मान दिया गया।

उनके सम्मान के रूप में, उनके चित्र को भारत के प्रधानमंत्री, डॉ मनमोहन सिंह द्वारा साल 2008 में, भारत की संसद के केंद्रीय हॉल में लगाया गया था। दिनकर ने शुरू में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान क्रांतिकारी आंदोलन का समर्थन किया ।
कुरुक्षेत्र में, उन्होंने स्वीकार किया कि युद्ध विनाशकारी था, लेकिन उन्होंने कहा है कि स्वतंत्रता की रक्षा के लिए यह आवश्यक था। दिनकर तीन बार राज्यसभा के लिए चुने गए, और वह 3 अप्रैल, 1952 से जनवरी 26, 1964 तक इस सभा के सदस्य थे और 1959 में उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।

प्रमुख काव्यात्मक कार्य

रामधारी दिनकर का पहला प्रकाशित कवितात्मक कार्य विजय संदेश (1928) था

उनके दूसरे काम हैं :-

- **प्रणभंग (1929)**
- **रेणुका (1935)**
- **हुनकर (महाकाव्य कविता) (1938)**

- रसवंती (1939)
- द्वन्दगीत (1940)
- कुरुक्षेत्र (1946)
- धूप छांव (1946)
- सामधेनी (1947)
- बापू (1947)
- इतिहास के आँसू (1951)
- धूप और धुन (1951)
- मिर्च का मज़ा (1951)
- रश्मिरथी (1952)
- दील्ली (1954)
- नीम के पत्ते (1954)
- सूरज का बियाह (1955)
- नील कुसुम (1954)
- चक्रवाल (1956)
- सीपी और शंख (1957)
- नाय सुभाषिता (1957)
- उर्वशी (1961)
- परशुराम की प्रतिक्षा (1963)
- कोयला और कवितवा (1964)
- मृति तिलक (1964)
- आत्मा की आँखे (1964)
- हारे को हरिनाम (1970)

कविता का संकलन

- लोकप्रिया कवि दिनकर (1960)
- दिनार की सूक्तियां (1964)
- दिनकर के गीत (1973)
- संचयिता(1973)
- रश्मिलोक (1974)
- उर्वशी तथा अन्य श्रंगारिक कवितायें (1974)
- अमृत मंथन, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008
- भाजन विना, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008
- सपनों का धुन, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008
- समानांतर लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008
- रश्मिमाला, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008

प्रमुख गद्य कार्य

दिनकर के प्रमुख विश्लेषणात्मक और अन्य गद्य कार्य हैं:-

- मिट्टी की ओर (1946)
- चित्तौर का साका (1948)
- अर्धनारीश्वर (1952)
- रेती की फूल (1954)
- हमारी सांस्कृतिक एकता (1954)

- **भारत की सांस्कृतिक कहानी (1955)**
- **राज्यभाषा और राष्ट्रीय एकता (1955)**
- **उजली आग (1956)**
- **संस्कृति के चार अध्याय (1956)**
- **काव्य की भूमिका (1958)**
- **पंत, प्रसाद और मैथिलीशरण (1958)**
- **वेणु वान (1958)**
- **धर्म, नैतिकता और विज्ञान (1959)**
- **वट-पीपल (1961)**
- **लोकदेव नेहरू (1965)**
- **शुद्ध कविता की खोज (1966)**
- **साहित्यमुखी (1968)**
- **हे राम! (1968)**
- **संस्मरण और श्रद्धांजलियन (1970)**
- **मेरी यत्रायें (1971)**
- **भारतीय एकता (1971)**
- **दिनकर की डायरी (1973)**
- **चेतना की शिला (1973)**
- **विवाह की मुसीबतें (1973) और**
- **आधुनिक बोध (1973)**
- **साहित्यिक आलोचना**
- **साहित्य और समाज, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008**
- **चिंतन के आयाम, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008**
- **कवि और कविता, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008**
- **संस्कृति भाषा और राष्ट्र, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008**
- **कविता और शुद्ध कविता, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008**

कविता का सारांश

मैं रात के अँधेरे में

सितारों की ओर देखता हूँ,

जिनकी रोशनी भविष्य तक जाती है |

अनागत से मुझे यह खबर आती है

कि चाहे लाख बदल जाए,

मगर भारत रहेगा |

<u>संदर्भ -</u> प्रस्तुत पंक्तियाँ रामधारी सिंह दिनकर जी द्वारा रचित अवकाशवाली सभ्यता कविता से ली गई है |

प्रसंग- कवि भारत के अतीत के गौरव एवं भारतीय संस्कृति के प्रति असीम लगाव को व्यक्त करते है |

व्याख्या - कवि रात के अँधेरे में भारत के भविष्य की ओर देखते है | कवि के अनुसार आज चारों तरफ विज्ञान के आविष्कारों का बोलबाला है | मानव निराश एवं हताश है | लेकिन इस निराशा के बीच भी कवि भविष्य को लेकर आशावादी है | और यह उम्मीद उसे भारत से है | क्यूंकि भारत का अतीत कर्मठता से परिपूर्ण है | भारत ने सदैव ही सभी समस्यायों का हल खोज निकाला है| इसलिए कवि को भारत से बहुत उम्मीद है | रात के अँधेरे से तात्पर्य उन तमाम परेशानियों से जो है,जिनका सामना भारत को करना पड़ा | इन असंगतियों और अव्यवस्था के दौर से भारत निश्चित रूप से बाहर आएगा और अपनी विश्वशक्ति बनने की ताकत को साबित करेगा |

<u>जो ज्योति दुनिया में</u>

<u>बुझी जा रही है,</u>

<u>वह भारत के दाहिने करतल पर जलेगी |</u>

<u>यंत्रों से थकी हुई धरती</u>

<u>उस रोशनी में चलेगी |</u>

<u>संदर्भ -</u> प्रस्तुत पंक्तियाँ रामधारी सिंह दिनकर जी द्वारा रचित अवकाशवाली सभ्यता कविता से ली गई है |

प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियों के जरिए कवि मशीनीकरण का विरोध करते है |

व्याख्या - कवि के अनुसार आज तरह-तरह के वैज्ञानिक आविष्कार हो रहे है | परिणामत: पूरी दुनिया ईश्वर, अहिंसा, शांति को मानव मन की कमजोरी के रूप में स्वीकार मान रही है | मानव में निर्दयता और असहिष्णुता की प्रवृति विकसित हो रही है | मगर ऐसे समय में भी कवि को उम्मीद है कि भारत फिर से विश्वगुरु बनेगा | भारत फिर से ज्ञान का प्रकाश सम्पूर्ण विश्व में फैलाएगा और इस विश्व को अकर्मण्यता (आलस्य,रुढ़िवाद) के अंधकार से मुक्त

करेगा | अब यह धरती निश्चित रूप से यंत्रों के बोझ से मुक्त होगी और नई रोशनी से प्रकाशित होगी ,और वह रोशनी भारत के दाहिने करतल पर जलेगी एवं पूरी दुनिया को नयी दिशा दिखायगी |

साबरमती, पाण्डिचेरी,तिरुवणमलइ

और दक्षिणेश्वर

ये मानवता के आगामी

मूल्य पीठ होंगे |

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ रामधारी सिंह दिनकर जी द्वारा रचित अवकाशवाली सभ्यता कविता से ली गई है |

प्रसंग- कवि भारत के उन स्थलों की चर्चा करते है , जो आनेवाले समय में विश्व के प्रमुख धरोहर स्थल बनेंगे |

व्याख्या - कवि अनुसार भारत में वहक्षमता है कि वह विश्वगुरु बन सके , और आने वाले समय में **साबरमती, पाण्डिचेरी, तिरुवणमलइ और दक्षिणेश्वर विश्व के प्रमुख** ज्ञान का संदेश देने वाले स्थल बनेंगे | भारत अतीत से ज्ञान का प्रमुख स्त्रोत रहा है | भारतीय संस्कृति विश्व की प्रमुख संस्कृतियों में से एक है | दक्षिणेश्वर माँ काली के परम भक्त रामकृष्ण परमहंस से संबंधित है, जिन्होंने आध्यत्मिक ज्ञान के जरिए मानव समाज को एकता, समता और बंधुत्व का संदेश दिया | साबरमती महात्मा गाँधी से संबंधित है,जिन्होंने अहिंसा और सत्य के मार्ग पर चलने का मार्ग दिखाया | **पाण्डिचेरी, तिरुवणमलइ महर्षि अरविंद और आदिगुरु शंकराचार्य से संबंधित है, जिन्होंने** आध्यत्मिकता और धार्मिक एकता का संदेश दिया | आज सम्पूर्ण विश्व को समता ,एकता, मैत्री ,अहिंसा आदि मूल्यों की आवश्यता पड़ेगी, जिसकी पूर्ति भारत द्वारा होगी |

जब दुनिया झुलसने लगेगी,

शीतलता की धारा यहीं से जाएगी |

रेगिस्तान में दौड़ती हुई संततियाँ

थकनेवाली है |

<u>वे फिर पीपल की छाया में</u>

<u>लौट आयेंगी |</u>

<u>संदर्भ -</u> प्रस्तुत पंक्तियाँ रामधारी सिंह दिनकर जी द्वारा रचित अवकाशवाली सभ्यता कविता से ली गई है |

प्रसंग- आधुनिक युग में व्याप्त मशीनीकरण किस प्रकार से मानव समाज को यंत्र की भांति बना रहा है, कवि दिनकर जी इस पंक्तियों में इसकी चर्चा कर रहे है |

व्याख्या - आज हम विज्ञान द्वारा किए गए आविष्कारों की चर्चा करते नहीं थकते ,लेकिन इसी विज्ञान ने हमें इतना इन मशीनों पर निर्भर रहना बना दिया है कि हम स्वयं की कार्य-शक्ति को, आत्मबल को भूल गए है | ऐसे समय में वह फिर एक बार भारत की ओर लौट आएगा ,जहाँ से उसे वही शीतलधारा मिलेगी, फिर एक बार वही ठंडी छाव मिलेगी , जो इस मशीनी युग में कहीं खो गई है | जो मानव इन वैज्ञानिक खोजो की तरफ आकर्षित हुआ था, वह निराश एवं हताश होकर गिर पड़ेगा, थक जाएगा, जब भारत देश ठंडी और आनंद देने वाला पेड़ बनकर उनकी सेवा करेगा | उन्हेंआत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा देगा |

NAME-PRITI TIWARI